ISSN 2321 - 8789 VARTA VAHAK
संख्या -222 जूलाई, 2019

वार्ता वाहक

यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत पत्रिकाओं में सूचीबद्ध

ओड़िशा की एक मात्र हिंदी मासिकी

प्रतिष्ठाता : डॉ० ब्रज सुन्दर पाढ़ी

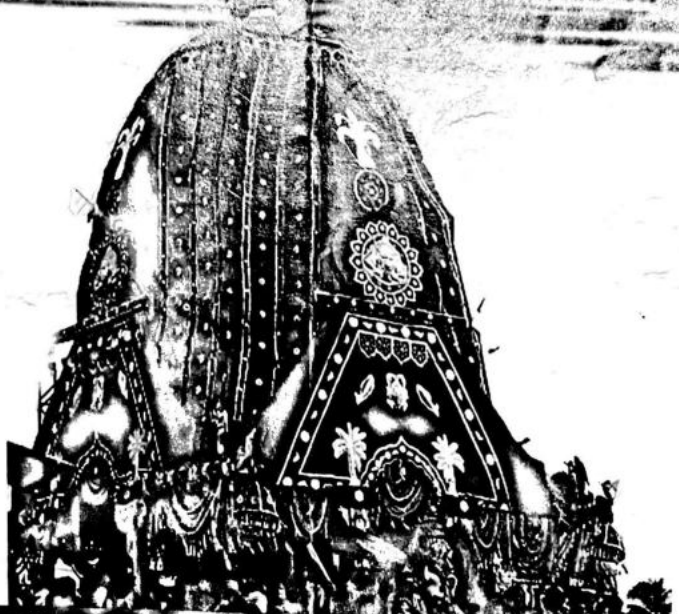

हिंदी शिक्षा समिति, ओड़िशा, कटक

Scanned with CamScanner

सूचीपत्र

संपादकीय 6

लेख :

1. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और हिंदी दलित साहत्यि दर्शन — डॉ. पंडित बन्ने 7
2. विज्ञापन और हिंदी भाषा — प्रा. डॉ. लक्ष्मण जे. वाणवी 10
3. मुंह छिपाने की नौबत क्यों ? — डॉ. सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी 13
4. भाषा की दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता — डॉ. विजय एस. सोजित्रा 16
5. समकालीन कविता में थर्ड जेंडर — डॉ. सुप्रिया पी 21
6. राहुल सांकृत्यायन : साहित्य का महापण्डित — शंकर लाल माहेश्वरी 26

कहानी :

7. जीवन की उत्कृष्टता — श्रीमती आशा गुप्ता 29

लघुकथा

8. उत्तरदायी कौन प्रकाशक या रचनाकार — डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' 30

समीक्षा

9. सम-साहित्य विशेषज्ञ एवं सहृदय साहित्यकार : डॉ. रमानाथ त्रिपाठी — डॉ. शकुंतला कालरा 33

कविता :

10. वह — नीबेदिता नायक 12
11. गजल — अब्बास खान 'संगदिल' 32
12. कुर्सी — पूजा हेमकुमार अलापुरिया 34
13. "इतिहास के कटघरे में" — उमाकांत खुबालकर 35
14. बचपन वाले वे दिन — मुल रचना : श्री देवदत्त मिश्र, अनुवादिका : डॉ. मंजु मोदी 37
15. श्री जगन्नाथष्टक (हिंदी पद्यानुवाद) — अनुवादक : डॉ. भवानीशंकर मिश्र 'विरंचि' 38

Scanned with CamScanner

समकालीन कविता में थर्ड जेंडर

डॉ. सुप्रिया पी

साहित्य में आज विविध विधाओं के साथ साथ विविध विमर्श उठे हैं, जिनमें किन्नर अथवा थर्ड जेंडर विमर्श एक ऐसा विमर्श है जो हमारे संवेदनात्मक तंतुओं को झकझोरती हैं । बरसों से समाज में बहिष्कृत, समाज के अपमान और तिरस्कार को सहते अभिशप्त किन्नरों पर रचनाकारों की दृष्टि बहुत देर से ही पड़ी हो, पर जैसा हम अंग्रेजी में बोलते हैं - 'Better late than never'. हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श के बीज 1939 में प्रकाशति निराला के संस्मरण 'कुल्ली भाट' में उपलब्ध होते हैं । नयी कहानी के दौर में शिवप्रसाद सिंह और पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने इनकी चर्चा अपनी कहानियों में यहाँ-वहाँ की हैं । किन्नर जीवन को सर्वप्रथम सामने रखा नीरजा माधव ने 2002 में अपने उपन्यास 'यमदीप' के जरिए जो पाठक को विषय की संवेदना के कारण आकर्षित कर सकी । इस कड़ी में महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा', निर्मला भुराड़िया का 'गुलाम मंडी' और चित्रा मुद्गल का 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' जैसे उपन्यासों ने किन्नर की दुनिया की वेदनाओं और अधिकारों की लड़ाई को पाठक के सम्मुख रखा जिससे हिन्दी साहित्य जगत में तहलका मच गया । उनका मानवीय पक्ष तलाशकर सामने लाया गया ।

समकालीन कविता में थर्ड जेंडर समुदाय के जीवन संघर्ष, वेदना एवं पीड़ा को परहेज रखा गया है । इस विषय पर केन्द्रित कविताओं की संख्या बहुत ही कम है लेकिन इस और दृष्टि बढ़ रही है इसमें कोई संदेह नहीं । कवियों ने किन्नर समुदाय की संवेदनाओं, आर्थिक सामाजिक स्थिति, पीड़ा, आक्रोश, वेदना को पाठक के सम्मुख प्रस्तुत किया है । 'किन्नर' प्रायः उन्हें कहते हैं जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हो अथवा पुरुष होकर भी स्त्रोण स्वभाव के लोग, जिन्हें पुरुषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है उन्हें हिजड़ा, ख्वाजासरा, किन्नर, नपुंसक, थर्ड जेंडर आदि नामों से पुकारा जाता है । अपने अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए वह खुद से ही पूछता है कि उसका अस्तित्व क्या है ।

कौन हूँ मैं
क्या अस्तित्व है मेरा
हूँ ईश्वर की भूल या
रहस्यमयी प्रकृति का प्रतिफल...
(अर्ध नारिश्वर' - सत्या शर्मा कीर्ति)

शारीरिक बनावट में जेंडर स्पष्ट नहीं होता, कुछ देह स्त्री का लेकर पुरुष का रुझान रखते हैं, या फिर देह पुरुष का रखकर मन स्त्री का । इस 'आइडेंटिटी डिसऑर्डर' की दशा में ये लोग अपने देह रुपी पिंजर में रहकर तड़पते हैं । ये ट्रांस -

Scanned with CamScanner